

---

Kailasashaile Ashtadiggopuravasi Nandikeshvaradiprokta Shiva  
Stuti

कैलासशैले अष्टदिग्गोपुरवासि नन्दिकेश्वरादिप्रोक्ता  
शिवस्तुतिः

Document Information

---

Text title : Kailasashaile Ashtadiggopuravasi Nandikeshvaradiprokta Shiva Stuti

File name : shivastutiHnandikeshvarAdipraktA.itx

Category : shiva, shivarahasya, stuti

Location : doc\_shiva

Transliterated by : Ruma Dewan

Proofread by : Ruma Dewan

Description/comments : shrIshivarahasyam | mAheshvarAkhyah prathamAMshaH | adhyAyaH 14-  
15||

Latest update : December 17, 2023

Send corrections to : sanskrit@cheerful.com

---

This text is prepared by volunteers and is to be used for personal study and research. The file is not to be copied or reposted without permission, for promotion of any website or individuals or for commercial purpose.

**Please help to maintain respect for volunteer spirit.**

---

Please note that proofreading is done using Devanagari version and other language/scripts are generated using **sanscript**.

---

December 17, 2023

*sanskritdocuments.org*

---

कैलासशैले अष्टदिग्गोपुरवासि नन्दिकेश्वरादिप्रोक्ता  
शिवस्तुतिः



नन्दिकेश्वर उवाच -

इन्दुखण्डललितामलमौले कुन्दकान्तिसदृशोत्तमदेह ।  
इन्दिरारमणलोचनपूज्य मन्मनोगहनपङ्कजवास ॥ १.१४.२७ ॥

सुकेशः -

पञ्चकोशगगनातिग शम्भो व्योमकेश गुणसारसहंस ।  
काशिकापुरनिवास महेश पाहि शङ्कर सुकेशमहेश ॥ १.१४.३३ ॥

चण्डिकेश्वरः -

चण्डीश खण्डपरशो शशिखण्डचूड ब्रह्माण्डमौलिग धराधरकार्मुकेश ।  
विध्युत्थमुण्डवरमालक कुण्डलीश चोच्चण्डताण्डव महेश्वर शूलदण्ड ॥ १.१४.४७ ॥

बाण उवाच -

बाणेश शम्भो हरिबाणपाणे त्वं पाहि गङ्गाधर चन्द्रचूड ।  
विश्वेश भर्ग मदनान्तक कालकाल मामद्य शङ्कर विभो गणनाथपूज्य ॥ १.१५.४ ॥

भद्राणि मे संविधत्स्वाद्य शम्भो दीक्षादिदक्षाध्वरध्वंसकाव ।

महेशान पञ्चाननेन्दुमकृष्टैकधाम प्रभो सम्प्रसीद प्रसीद प्रसीद ॥ १.१५.५ ॥

भृङ्गी उवाच -

भृङ्गीगीश मे मनसिजस्तवपादपद्मभृङ्गो भवत्वनुदिनं सरसानुमोदः ।  
प्राप्नोतु भक्तिमखिलां तव पादपद्मे माया तु यातु दुरितिं चरितन्तवेश ॥ १.१५.१९ ॥

श्रीशङ्करामयहेश्वर विश्वमूर्ते विश्वाधिकेश करसङ्गिकुरङ्गबाल ।

मन्दारकुन्दनवचम्पकबिल्वमाला दिव्योत्तमाङ्गदशुभुजङ्ग सुरेश पाहि ॥ १.१५.२० ॥

रिटिरुवाच -

विश्वेश विश्व मदनान्तक विश्वमूर्ते गौरीवरामरभुजङ्गफणाभिराम ।  
गङ्गाधरान्तकरिपो प्रमथाधिनाथ पाहीश मामकधियाद्य ललामसोम ॥ १.१५.२९ ॥

कालाग्निरुद्र उवाच -

त्रियम्बक सदाशिव त्रिपुरमारकालान्तक  
त्रिशूलवरपाशसंयुतकराद्रिबाणासन ।  
(त्रियम्बक सदाशिव त्रिपुरमार कालान्धका-  
द्यपारसुरशत्रुहन्हरिशराद्रिबाणासन ।)  
प्रसादजनितानन प्रकटचण्डधामागम  
सुधांशुकशिखण्डक सुरसनाथ मां पालय ॥ १.१५.४१ ॥

वीरभद्र उवाच -

क्षयद्वीर दक्षाध्वरध्वंसकाशावसेशन चाशाविहीनेति तुष्टः ।  
त्वमेवासि भद्रं त्वमेवास्य भद्रं सताञ्चासतामाशु मां मोक्षयाद्य ॥ १.१५.५१ ॥

॥ इति शिवरहस्यान्तर्गते माहेश्वराख्ये कैलासशैले  
अष्टदिशागोपुरवासि नन्दिकेश्वरादिप्रोक्ता शिवस्तुतिः ॥

- ॥ श्रीशिवरहस्यम् । माहेश्वराख्यः प्रथमांशः । अध्यायः १४-१५ ॥


- .. shrIshivarahasyam . mAheshvarAkhyah prathamAMshaH . adhyAyaH 14-15..

Notes:


Skanda स्कन्द; being requested by Jaigīṣavya जैगीषव्य, describes in detail about regions of Mount Kailāsa कैलास प्राकार amongst which is the abode of Maheśa महेश and several Rudragāṇa-s रुद्रगण. He describes the residences of (and the respective Śivaliṅga शिवलिङ्ग worshipped by) Nandikeśa नन्दिकेश (Nandikeśvaraliṅga नन्दिकेश्वरलिङ्ग), Caṇḍīśvara चण्डीश्वर (Caṇḍīśvaraliṅga चण्डीश्वरलिङ्ग), Sukeśa सुकेश (Sukeśvaraliṅga सुकेश्वरलिङ्ग), Bāṇa बाण (Bāṇeśvara बाणेश्वर), Bhr̥ṅgī भृङ्गी (Bhr̥ṅgīśvara भृङ्गीश्वर), Riṭī रिटी (Riṭīśa रिटीश), Kālgnirudra काल्ग्निरुद्र (Kālarnudreśvara कालरुद्रेश्वर), Vīrabhadra वीरभद्र (Vīrabhadreśvara वीरभद्रेश्वर) among the eight directions respectively - starting clockwise with East.

Selected verses from Adhyāya-s 14 and 15 are collated on this page.

Encoded and proofread by Ruma Dewan

——  
*Kailasashaile Ashtadiggopuravasi Nandikeshvaradiprokta Shiva Stuti*

pdf was typeset on December 17, 2023

——  
Please send corrections to [sanskrit@cheerful.com](mailto:sanskrit@cheerful.com)

